शाश्वत

# राष्ट्रबोध

प्रकाशन तिथि ०१-०५-२०१९

वर्ष - ३० अंक - ५ मई २०१९ विक्रम संवत् २०७६ पृष्ठ - २० सहयोग राशि - ५.००

## बुलेट नहीं बैलट पर आस्था

बलिदानी भाजपा विधायक
भीमा मंडावी की धर्मपत्नि
श्रीमती ओजस्वी मंडावी

मास्टर दीनानाथ मंगेशकर स्मृति पुरस्कार वितरण समारोह में - डॉ. मोहन जी भागवत ( मुंबई 24-04-2019 )

जेएनयू नई दिल्ली में लालबहादूर शास्त्री के जीवन पर आधारित 'द ताशकंद फाइल्स' की स्क्रीनिंग के अवसर पर अ.भा.वि.प. के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर और फिल्म निदेशक श्री विवेक अग्निहोत्री ( 23-04-2019 )

आतंकी हमले में बलिदान हुए चन्द्रकान्त शर्मा जी की श्रद्धांजलि सभा ( किश्तवाड़ - 19-04-2019 )

आतंकी हमले में बलिदान हुए चन्द्रकान्त शर्मा जी की श्रद्धांजलि सभा ( जम्मू - 21-04-2019 )

## सुभाषित

**गते शोको न कर्तव्यो भविष्यं नैव चिन्तयेत्।**
**वर्तमानेन कालेन वर्तयन्ति विचक्षणाः॥**

**अर्थात्**– बीते हुए समय का शोक नहीं करना चाहिए और भविष्य के लिए परेशान नहीं होना चाहिए, बुद्धिमान तो वर्तमान में ही कार्य करते हैं।

## संपादकीय

### भारत का गौरवशाली अवसर...

वर्तमान के भारत में कई प्रकार के परिवर्तन दिखने लगे है। यह भारत वर्षों की गन्दगी को दूर कर अब स्वच्छ भारत दिखने लगा है। 5 वर्षों में सब कुछ हो गया, यह कहना ठीक नहीं है। किन्तु कुछ भी नहीं हुआ, यह कहना भी गलत है। इसी देश में हिन्दू एवं भगवा को आतंकवादी कहा है। वर्दी को अत्याचारी कहा। देश की पुरानी राजनीतिक पार्टी देशद्रोहियों को छोड़ने की बात कहती हैं, एक देश में दो प्रधानमंत्री की बात कहते हैं। इसे भारत सहन नहीं करेगा।

केन्द्र की वर्तमान सरकार के कारण पूरा विश्व योग और गीता को आदर की दृष्टि से देखने लगा है। बालाकोट की घटना के बाद पूरे भारत में जश्न मनाया गया। पूरा विश्व भारत के साथ खड़ा रहा। यूरोप, अमेरिका और चीन भारत के साथ रहे। मुस्लिम देशों के संगठन से पाकिस्तान बाहर हुआ और वहां भी भारत का सम्मान बढ़ा। स्वदेशी एंटी-सैटेलाइट मिसाइल (एसेट) ने अंतरिक्ष में मिसाइल को मार गिराने में 'मिशन शक्ति' ऑपरेशन को सफलतापूर्वक पूर्ण किया। भारत ने दुश्मन के उपग्रह को अंतरिक्ष में ही मार गिराने की क्षमता प्राप्त कर दुनिया की चौथी अंतरिक्ष महाशक्ति के रूप में अपना नाम दर्ज कर लिया हैं। यह परीक्षण कर भारत ने किसी भी अंतर्राष्ट्रीय संधि का उल्लंघन नहीं किया, यह देश के विकास के लिए बड़ी रक्षात्मक पहल है। इस ऐतिहासिक असाधारण सफलता से भारत अंतरिक्ष महाशक्ति बन गया हैं तथा हम निरंतर सुरक्षित और समृद्ध राष्ट्र की ओर बढ़ रहें हैं।

## ए महिना के तिहार

ए महिना के पहिली तिहार अक्ति सात तारीक के परिही, उहि दिन भगवान परशुराम के प्रकटोत्सव घलौ हवय। भगवान बुद्ध के पुन्नी अठारह तारीक के परिही। महिना के पहिली एकादसी (मोहिनी) पन्द्रह तारीक अऊ दूसर एकादसी (अचला) तीस तारीक के परिही।

| | | |
|---|---|---|
| **अक्षय तृतीया व परशुराम प्रकटोत्सव** | **– वैशाख शु. 3** | **– 07 मई** |
| **मोहिनी एकादशी** | **– वैशाख शु. 11** | **– 15 मई** |
| **बुद्ध पूर्णिमा** | **– वैशाख शु. 15** | **– 18 मई** |
| **अचला एकादशी** | **– ज्येष्ठ कृ. 11** | **– 30 मई** |

आघू पाछू के पन्ना म जेन पुरखा मन के फोटो छाप के सुरता करे हन, ओ मन के संगे संग तीन तारीक के डॉ. जाकिर हुसैन के पुण्यतिथि घलौ परिही।

आजकाल के दिवस मनाए के रद्दा म एक तारीक के श्रमिक दिवस, तीन तारीक के प्रेस स्वतंत्रता दिवस, ग्यारह तारीक के राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस, बारह तारीक के मातृदिवस दिवस, सत्रह तारीक के दूरसंचार दिवस, बाईस तारीक के अंतर्राष्ट्रीय जैविक विविधता दिवस अऊ इक्कतीस तारीक के धुम्रपान निषेध दिवस मनाए जाही।

अऊ कोनो तिहार छूटे होही तेला बताहा, त आघू सकेलबो।

**जय जोहार – जय माँ भारती।**

**आदि पत्रकार**

**देवर्षि नारद**

**जयंती**

**ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया**

**( 20 मई 2019 )**

# बाजार में नहीं मिल रही थी कंप्यूटर एकाउंटिंग की पुस्तक, हरिप्रसाद ने नेट की मदद से खुद लिखी और दो हजार से अधिक छात्रों को बांट दी निःशुल्क पुस्तकें

सीजी बोर्ड के विद्यालयों में इस साल 12वीं कक्षा में एनसीईआरटी की पुस्तक से पढ़ाई की शुरुआत की गई है। कॉमर्स के छात्रों को 12वीं में ऐच्छिक विषय के रूप में कंप्यूटर एकाउंटिंग सिस्टम की पढ़ाई का अवसर दिया गया। ये पुस्तक मार्केट में उपलब्ध नहीं हो रही थी। इस बात की जानकारी जब बंजारी गुरुकुल विद्यालय के प्राचार्य हरिप्रसाद जोशी को हुई तो उन्होंने व्यक्तिगत प्रयासों से पुस्तक भी प्रकाशित करवा दी। पुस्तक लिखने के लिए उन्होंने विषय तज्ञ और इंटरनेट की मदद भी ली। इतना ही नहीं, पुस्तक प्रकाशित होने के बाद हरिप्रसाद जोशी ने शहर के 2 हजार से अधिक छात्रों को निःशुल्क में पुस्तक बांट दी। उन्होंने कहा कि पुस्तक तैयार होने के बाद उन्होंने एक कॉपी माध्यमिक शिक्षा मंडल के अधिकारियों को भी दिखाई। हरिप्रसाद जोशी ने बताया, 12वीं कॉमर्स को तीन ग्रुप में विभाजित किया गया है। ग्रुप ए की पढ़ाई सभी के लिए अनिवार्य है। वहीं ग्रुप बी और सी में छात्र अपनी पसंद के अनुसार विषय पढ़ सकते हैं।

**4 यूनिट में बांटा पूरा पाठ्यक्रम**—हरिप्रसाद जोशी ने बताया कि पहली बार छत्तीसगढ़ राज्य बोर्ड के विद्यालयों में एनसीईआरटी से पढ़ाई अनिवार्य की गई। कॉमर्स के छात्रों को ऐच्छिक के रूप में कंप्यूटर एकाउंटिंग सिस्टम और वित्तीय विवरण का विश्लेषण

में किसी एक विषय को पढ़ना था। जैसे ही हमने विकल्प के रूप में कंप्यूटर कोर्स पढ़ने का अवसर देखा तो तुरंत अपने संस्थान में कंप्यूटर एकाउंटिंग पढ़ाने का निर्णय ले लिया, क्योंकि वित्तीय विवरण का विश्लेषण तो सिर्फ 12वीं के बाद सीए करने वाले छात्रों के लिए फायदेमंद है, लेकिन कंप्यूटर एकाउंटिंग तो हमेशा काम आने वाला विषय है। कुछ समय बाद शिक्षक और छात्रों ने बताया कि इसकी पुस्तक बाजार में नहीं है। हमने कई प्रकाशन वालों से बात की तो इतनी कम पुस्तकें प्रकाशन करने के लिए कोई तैयार नहीं हुआ। हमने खुद इसका जिम्मा लिया और 2 महीने में पुस्तक तैयार कर दी। पूरे पाठ्यक्रम को 120 पेज में 4 यूनिट में बांटकर तैयार किया। एक पुस्तक प्रकाशित करने में लगभग 80 रुपए लागत आयी।

**प्रेरक प्रसंग**

# स्पष्टवादिता

एक बार स्वामी दयानन्द सरस्वती नवाब नवाजिस अलीखाँ की कोठी पर उतरे हुए थे। उनसे चर्चा करने के लिए सभी प्रकार के लोग आया करते थे। एक दिन इस्लाम धर्म पर चर्चा चली और स्वामी जी ने उसका खण्डन शुरू कर दिया। नवाब भी वहाँ उपस्थित थे और दूर से उनकी बातें सुन रहे थे। थोड़ी देर तक वे चुप रहे और जब उनसे न रहा गया तो स्वामी जी के पास आये और बोले, ''मैंने आपको ठहरने के लिए कोठी दी और आप हैं कि हमारे इस्लाम का खण्डन करते हैं! यदि आपका इसी प्रकार का रवैया रहा, तो मैं नहीं सोचता कि आपके ठहरने के लिए कोई हिन्दू, मुसलमान या ईसाई स्थान देगा।'' इस पर स्वामीजी ने उत्तर दिया, ''आपने अपनी कोठी में ठहरने हेतु स्थान दिया है, इसका यह अर्थ नहीं कि मैंने अपनी सुख-सुविधाओं के लिए अपना धर्म बेच डाला है। मैं सत्य बात हमेशा कहूँगा। मुझे किसी प्रकार का भय या एहसान की भावना अपने विचारों को व्यक्त करने से नहीं रोक सकती, फिर चाहे ऐसा करने में मुझे क्लेश भी क्यों न हो!''

# आखिर साध्वी से परहेज क्यों है ?

— डॉ. नीलम महेन्द्र

साध्वी प्रज्ञा को भोपाल से भाजपा द्वारा अपना उम्मीदवार घोषित करते ही देश में जैसे एक राजनैतिक भूचाल आता है जिसका कंपन कश्मीर तक महसूस किया जाता है। भाजपा के इस कदम के विरुद्ध में देश भर से आवाजें उठने लगती हैं। यहां तक कि कश्मीर तक ही सीमित रहने वाले नेशनल कॉन्फ्रेंस और पीडीपी जैसे दलों को भी भोपाल से साध्वी प्रज्ञा के चुनाव लड़ने पर ऐतराज है। इन सभी का कहना है कि उन पर एक आतंकी साजिश में शामिल होने का आरोप है और इस समय वे जमानत पर बाहर हैं इसलिए भाजपा को उन्हें टिकट नहीं देना चाहिए। लेकिन ऐसा करते समय ये लोग भारत के उसी संविधान और लोकतंत्र का अपमान कर रहे हैं जिसे बचाने के लिए ये अलग अलग राज्यों में अपनी अपनी सुविधानुसार एक हो कर या अकेले ही चुनाव लड़ रहे हैं। क्योंकि ये लोग भूल रहे हैं कि जो संविधान इन्हें अपना विरोध दर्ज करने का अधिकार देता है वो ही संविधान साध्वी प्रज्ञा को चुनाव लड़ने का अधिकार भी देता है। ये लोग भूल रहे हैं कि 1977 में जॉर्ज फर्नान्डिस देशद्रोह के आरोप के साथ ही जेल से ही चुनाव लड़े भी थे और जीते भी थे।

दरअसल हमारे राजनैतिक दलों का यही चरित्र है कि वो तथ्यों का उपयोग और उनकी व्याख्या अपनी सुविधानुसार करते हैं। इन दलों को कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष से लेकर अनेक महत्वपूर्ण पदों पर बैठे नेता जो आज जमानत पर हैं और चुनाव भी लड़ रहे हैं उनसे नहीं लेकिन साध्वी से ऐतराज होता है। इन्हें देशविरोधी नारे लगाने वाले और जमानत पर रिहा कन्हैया के चुनाव लड़ने पर नहीं साध्वी के चुनाव लड़ने पर ऐतराज होता है। इन्हें लालू प्रसाद यादव जिन पर भ्रष्टाचार के आरोप सिद्ध हो चुके हैं और जो आज जेल में ही हैं उनकी विरासत आगे बढ़ाते तेजस्वी यादव और उनकी पार्टी से परहेज नहीं है तो फिर आखिर साध्वी से क्यों है जिन पर आज तक कोई आरोप सिद्ध नहीं हो पाया है।

दरअसल ये चमत्कार भारत में ही संभव है कि महिला अस्मिता से खेलने वाले अभिषेक मनु सिंघवी को सबूतों के होते हुए भी एक दिन जेल नहीं जाना पड़ता लेकिन बिना एफआईआर के एक साध्वी को कारावास में डाल दिया जाता है। ये कमाल भी शायद भारत में ही संभव है कि अजमल कसाब अफजल गुरू और याकूब मेमन जैसे आतंकवादी जिन्हें अन्ततः फाँसी की सजा सुनाई जाती है उनकी सुरक्षा और स्वास्थ्य पर लाखों खर्च किए जाते हैं लेकिन बगैर सुबूतों के एक महिला साध्वी को थर्ड डिग्री देकर उनकी रीड की हड्डी तोड़ दी जाती है। ये कमाल भी भारत में ही संभव है कि एक एनकाउंटर में जब इशरत जहां नाम की आतंकवादी और उसके साथियों को मार गिराया जाता है तो तमाम इनटेलिजेंस इनपुट से किनारा करते हुए भारत के ही कुछ लोगों द्वारा ये कहा जाता है कि ये चार लोग आतंकवादी ही नहीं थे बल्कि आम नागरिक थे, पुलिस ने इन्हें गोली मार दी और मरे हुए लोगों के हाथ में हथियार थमा दिए। लेकिन जब अमेरिका की एफबीआई लश्कर के मुखबिर हेडली को गिरफ्तार करती है तो वो स्वीकार करता है कि इशरत लश्करे तैयबा की आत्मघाती हमलावर थी। वैसे ऐसे कमाल पहले भी हो चुके हैं जैसे जिस 2जी घोटाले को कैग स्वीकार करती है, सीबीआई की अदालत सुबूतों के अभाव में उसके आरोपियों को क्लीन चिट दे देती है।

इस सबसे परे एक प्रश्न ये भी है कि, अमेरिका में 9/11 के हमले के कुछ घंटों के बाद ही एफबीआई

(शेष पृष्ठ १२ पर)

# माओवादी आतंकियों ने की भीमा मंडावी की हत्या

**दंतेवाड़ा।** छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित जिला दंतेवाड़ा के श्यामगिरी इलाके में मंगलवार 9 अप्रैल 2019 को अत्यन्त नियोजित तरीके से माओवादी आतंकियों ने बारूदी सुरंग लगाकर भाजपा विधायक भीमा मंडावी की हत्या की, जिसमें 4 सुरक्षाकर्मी भी शहीद हो गए। वे लोकसभा चुनाव में ग्राम ग्राम में सभाएं लेकर जनजाति बाहुल्य क्षेत्र के मतदाताओं को लोकतंत्र के महापर्व पर अधिकाधिक मतदान करने का आह्वान करने के क्रम में सघन दौरे पर थे, ऐसे समय में माओवादी आतंकियों ने उन्हें अपना निशाना बनाकर उनकी हत्या की।

**कौन है भीमा मंडावी ?**

भीमा मंडावी ग्राम गदापाल विकासखण्ड दंतेवाड़ा घोर नक्सल प्रभावित गांव के निवासी थे। सन् 2004 में ग्राम पंचायत सचिव संघ के जिला के अध्यक्ष चुने गये थे। इसके पूर्व से ही विश्व हिन्दू परिषद बजरंग दल के दंतेवाड़ा जिलाध्यक्ष थे। तब से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बहुत निकट व सक्रियता से संघकार्य में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रुप से सहयोग करते रहे। 2008 में कांग्रेस के ताकतवर कद्दावर नेता (बस्तर टाईगर के नाम से प्रसिद्ध, विराट व्यक्तित्व के धनी, जिनसे नक्सली भी थर-थर कांपते थे) श्री महेन्द्र कर्मा जी को 12000 मतों से पराजित किया और पहली बार विधायक चुने गए। 2013 में श्रीमती देवती महेन्द्र कर्मा से 5600 मतों से पराजित हुए, परन्तु सतत् संघर्षशील रहे। क्षेत्र में कार्यकर्ताओं से सदैव सम्पर्क व सहयोग करते रहे। पुन: 2018 के विधानसभा चुनाव में भीमा मंडावी विजयी हुए। समूचे बस्तर सम्भाग में 12 में से एकमात्र भाजपा विधायक चुनकर आए। उन्होंने बस्तर क्षेत्र में साहसी कार्यकर्ता के रुप में अपनी पहचान बनाई थी। उन्होंने 2002 में स्नातक की डिग्री हासिल की। भीमा मूलत: कृषक थे, उनके परिवार में माता-पिता और पत्नी ओजस्वी मंडावी के अलावा एक पुत्र खिलेंद्र मंडावी है। यहां गौर करने वाली बात है कि पिछले चुनाव में जहां कांग्रेस जहां एकतरफा जीती थी वहीं भीमा मंडावी बस्तर संभाग से अकेले विधायक चुने गए थे। भीमा की छवि बतौर हिन्दूवादी नेता रही। वे

(शेष पृष्ठ ५ पर)

# सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश सतीश कुमार अग्निहोत्री करेंगे भीमा मंडावी पर हुए हमले की जाँच

दिवंगत विधायक भीमा मंडावी पर हुए नक्सली हमले की जाँच सिक्किम उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश सतीश कुमार अग्निहोत्री करेंगे। राज्य के वरिष्ठ अधिकारियों ने बताया कि सिक्किम उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश सतीश कुमार अग्निहोत्री ने छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा विधानसभा क्षेत्र के विधायक भीमा मंडावी पर हुए हमले की जाँच करने के लिए गठित समिति के अध्यक्ष के रूप में कार्य करने को लेकर अपनी सहमति दी है। दंतेवाड़ा जिले के श्यामगिरी क्षेत्र माओवादियों ने लोकसभा के पहले चरण के मतदान से पूर्व नौ तारीख को भीमा मंडावी के वाहन को बारूदी सुरंग से उड़ा दिया गया था। इस घटना में भीमा मंडावी और चार अन्य सुरक्षा कर्मियों की मौत हो गई थी।

# माओवादी आतंकियों का कृत्य निंदनीय

छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी के वर्तमान विधायक भीमा मंडावी एवं उनके साथ चार सुरक्षाकर्मियों की माओवादी आतंकियों द्वारा बस्तर में की गई निर्मम हत्या की राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कठोर शब्दों में निंदा करता है।

जनजातीय समाज के सुख-दुख में समरस, सादगी और सरलतापूर्ण जीवन एवं आचरण के कारण वे संपूर्ण समाज में अत्यंत लोकप्रिय थे। वे अपने साहसी स्वभाव और देशभक्ति पूर्ण विचारों के कारण माओवादियों की निगाह में सदैव खटकते थे। उनका असमय बलिदान एक ऐसी शून्यता पैदा कर गया, जिसको भरने में राष्ट्रीय शक्तियों को बहुत समय लगेगा। परिवार के सभी आत्मीय जनों को हार्दिक संवेदनाएं एवं दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान देने के लिए प्रभु से प्रार्थना।

**— सुरेश ( भैय्याजी ) जोशी,**
सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

# धारा 370 और 35ए को हटाना जरूरी - जस्टिस संतोष हेगड़े

**नई दिल्ली।** सर्वोच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश संतोष हेगड़े ने कहा कि अनुच्छेद 35ए और 370 को खत्म करने की जरूरत है। ऐसा इसलिए क्योंकि ये दोनों अन्य राज्यों के अधिकारों के विपरीत हैं। दोनों अनुच्छेदों के तहत जम्मू-कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा प्राप्त है।

जस्टिस हेगड़े ने कहा कि ''1948 में जब कश्मीर के महाराजा राज्य का भारत में विलय करने पर सहमत हुए थे, तब संविधान के अनुच्छेद 35ए और 370 के तहत लोगों को कुछ आश्वासन दिया गया था। इसके शब्द ऐसे लगते हैं, जैसे जिस पृष्ठभूमि में आश्वासन दिए गए वे स्थायी हैं। इसके बाद देश में जो घटनाएँ हुईं, वे दिखाती हैं कि इन अनुच्छेदों को जारी रखना संभव नहीं है क्योंकि अगर कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है तो इसे अन्य राज्यों की तुलना में अलग दर्जा नहीं दिया जा सकता है।''

उन्होंने कहा कि आज की स्थिति में जरूरी है कि इन अनुच्छेदों को समाप्त कर दिया जाए क्योंकि उस कानून के तहत दी गई कुछ स्वायत्तता अन्य राज्यों के अधिकारों के विपरीत है। अगर कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है तो इसका दर्जा अन्य राज्यों के बराबर ही होना चाहिए।

कर्नाटक के पूर्व लोकायुक्त ने कहा, '70 वर्ष बीत चुके हैं, मेरे मुताबिक उन अनुच्छेदों का जो उद्देश्य था वह पूरा हो गया है।' 'इसलिए यह नहीं कहा जा सकता है कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग नहीं है। इसलिए दोनों अनुच्छेदों का संविधान में कोई स्थान नहीं रह गया है।'

अनुच्छेद 370 भारतीय संविधान में जम्मू-कश्मीर से संबंधित है। जिसका हवाला देकर 1954 में प्रेसिडेंशियल ऑर्डर द्वारा लागू 35ए उस राज्य में बाहरी लोगों को जमीन एवं संपत्ति खरीदने से रोकता है।

(पृष्ठ ४ का शेष)

विश्व हिन्दू परिषद से भी जुड़े रहे और भाजपा के आदिवासी युवा मोर्चा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी थे।

11 अप्रैल को बस्तर में मतदान था और लोकतंत्र के महापर्व पर उनकी पत्नी ओजस्वी मंडावी ने माओवादी आतंकियों के मंसूबों को चुनौती देते हुए निडर होकर वे मतदान केंद्र तक अपने पूरे परिवार के साथ मतदान करने पहुंची। इस तरह उसने 'नक्सल हारा और लोकतंत्र जीता' का सन्देश दिया तथा बुलेट नहीं बैलट पर आस्था जतायी।

# गांव हो तो बघुवार जैसा

**— प्रदीप कुमार पाण्डेय**

यह सच है कि, असली भारत गांवो में बसता है।यदि आप किसी आदर्श गांव को देखना चाहते हैं तो मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर जिले के बघुवार गांव चलिए। साफ सुथरी सड़कें, भूमिगत नालियां, हर घर में शौचालय, खेलने के लिए इनडोर स्टेडियम व खाना बनाने के लिए बायोगैस संयत्र । वर्षों से गांव का कोई विवाद थाने तक नहीं पहुंचा। स्कूल व सामुदायिक भवन के लिए जब सरकार का दिया पैसा कम पड़ा तो बघुवार वासियों ने धन भी दिया व श्रमदान भी किया। यह सब 50 वर्षों से चल रही संघ की शाखा व स्वयंसेवकों द्वारा किए जा रहे ग्राम विकास के प्रयासों का नतीजा है। लगभग 25 वर्ष तक गांव के निर्विरोध सरपंच रहे ठाकुर सुरेंद्र सिंह, ठाकुर संग्राम सिंह एवं हरिशंकरलाल जैसे स्वयंसेवकों ने तत्कालीन सरकार्यवाह भाऊराव देवरस की प्रेरणा से अपने गांव को आदर्श गांव बनाने की ठानी। 50 वर्षों से नियमित चल रही प्रभात फेरी हो या हर घर की दीवार पर लिखे सुविचार या फिर बारिश के पानी को संग्रहित करने की आदत, बघुवार को बाकी सब गांवो से अलग करती है।

1950 से बघुवार की ग्राम विकास समिति समग्र ग्राम विकास के मॉडल पर काम कर रही है। गांव तक पहुंचने वाली 3 किलोमीटर लंबी सड़क यहां के नवयुवकों ने मिलकर बनायी है। कृषि विशेषज्ञ व संघ के तृतीय वर्ष शिक्षित स्वयंसेवक बघुवारवासी एम.पी. नरोलिया जी बताते हैं कि गांव के लोग कभी भी विकास के लिए सिर्फ सरकार पर निर्भर नहीं रहे। सरकार से मिली राशि में गांववालों ने डेढ़ लाख मिलाकर गांव का स्कूल भवन पक्का बनाया व भ्रमरी नदी पर बने स्टॉपडेम में ढाई लाख रूपए देकर खेती के लिए पानी के संकट को भी हल कर दिया। नियमित साफ सफाई, घरों के आगे बने सोखते गड्ढे, भूमिगत नालियो का निर्माण, समूचे गांव में वृक्षारोपण या इंद्रदेव द्वारा वरदान वर्षाती जल की हरेक बूंद को सहेजकर सिंचाई में उपयोग करना यह सब गांववालों की आदत में शामिल हो चुका है।

# बाल-बाल बचे मासूम

अग्नि जब विकराल रुप धारण करती है, तब मनुष्य बेबस हो जाता है। किन्तु मनुष्य के साहस के समक्ष कभी-कभी आग भी समर्पण कर देती है। 23 नवंबर 2017 ये का दिन इंदौर (मध्यप्रदेश) के सबसे बड़े शासकीय अस्पताल एम वाय के इतिहास में काली स्याही से लिखा जाता यदि चंद फरिश्तों ने अपनी जान की बाजी लगाकर 48 बच्चों को आग की भेंट चढ़ने से बचा न लिया होता। बच्चों के इमरजेंसी वार्ड में लगी आग में सबकुछ स्वाहा होने से पहले वार्ड के कांच के शीशे तोड़कर तीन लोगों ने बच्चों को निकालना शुरु किया, उन्हें देखकर अस्पताल के बाकी कर्मचारी भी मदद के लिए आगे आए। दिनेश सोनी, रमेश वर्मा व गजेन्द्र रसीले ये तीनों अस्पताल में गरीब मरीजों के लिए चलने वाले सेवा भारती के सेवा प्रकल्प के कार्यकर्ता थे। गरीब व असहाय मरीजों को जांच से लेकर इलाज तक हर संभव मदद करने के लिए सेवा भारती इंदौर के द्वारा ये हेल्पिंग सेंटर गत तीन वर्षों से सेवा भारती सेवा प्रकल्प के नाम से अस्पताल के परिसर में चलाया जा रहा है। इस प्रोजेक्ट के तहत सहारा वार्ड में हर बेसहारा मरीज की हर तरह से मदद की जाती है।

23 नवंबर की चर्चा करते ही गजेन्द्र रसीले भावुक हो जाते हैं। आग लगने का शोर सुनकर वे जब अपने दोनों साथियों के साथ वार्ड के पास पहुंचे तो अफरा तफरी मची हुई थी बच्चे घबराहट के मारे चीख रहे थे

(शेष पृष्ठ ७ पर)

# वृक्षमाता

## सालुमरदा थीम्मक्का

सालुमरदा थीम्मक्का, भारतीय नारी की संकल्प शक्ति, दृढ़ निश्चय और लगन की जीती-जागती तस्वीर है। कर्नाटक की रहने वाली सालुमरदा थीम्मक्का पर्यावरणविद् और सामाजिक कार्यकर्ता हैं। थीम्मक्का ने बरगद के 400 पेड़ों समेत 8000 से ज्यादा पेड़ लगाएं हैं और यही वजह है कि उन्हें 'वृक्ष माता' के नाम से जाना जाता है। उन्होंने लगभग 4 किलोमीटर के क्षेत्र में पेड़ लगाए हैं, जिससे वो क्षेत्र काफी हरा-भरा हो गया है।

प्रकृति के प्रति उनका लगाव देखते हुए थीम्मक्का का नाम 'सालुमरदा' रख दिया गया। सालुमरदा एक कन्नड़ भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है 'वृक्षों की पंक्ति'। उन्हें अब तक कई सम्मान मिल चुके हैं। इस वर्ष उन्हें पद्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

थीम्मक्का की कहानी धैर्य और ऐसे दृढ़ संकल्प की कहानी है, जिसने उन्हें विश्वप्रसिद्ध कर दिया है। एक समय थीम्मक्का भी साधारण जिंदगी जी रही थीं। लेकिन शादी के काफी समय बाद भी उन्हें संतान नहीं हुई। ऐसे में जब वह उम्र के चौथे दशक में थीं, संतान न होने के गम में वह खुदकुशी करने की सोच रही थीं। लेकिन अपने पति के सहयोग से उन्होंने वृक्षारोपण में जीवन का संतोष तलाश लिया। इसके बाद उन्होंने पूरा जीवन वृक्षारोपण के लिए समर्पित कर दिया है। वह रोजाना पति के साथ निकलती और जहाँ संभव होता वहाँ पौधे लगा देती। इस तरह उन्होंने लगभग 8000 हजार पौधे लगा दिए। ये कारनामा उन्होंने 65 साल के दौरान कर दिखाया है। साल 1991 में उनके पति की मृत्यु हो गई थी।

थीम्मक्का को पद्म पुरस्कार देने के लिये जब राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद झुके तो थीम्मक्का ने आशीर्वाद देते हुए अपना हाथ राष्ट्रपति के सर पर रख दिया। थीम्मक्का के ममता भरे स्पर्श से राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अन्य मेहमानों के चेहरे पर मुस्कान आ गई। इसके बाद समारोह कक्ष उत्साहपूर्वक तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। राष्ट्रपति भवन में ऐसा नजारा बेहद कम देखने को मिलता है।

इस ममतामयी पल के लिये ट्विट करते हुए राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने कहा 'आज जब पर्यावरण की रक्षा में तत्पर, कर्नाटक की 107 वर्ष की वयोवृद्धा सालुमरदा थीम्मक्का ने आशीर्वाद देते हुए मेरे सिर पर हाथ रखा तो मेरा हृदय भर आया।'

---

(पृष्ठ ६ का शेष)

परिजनों का बुरा हाल था तब बगैर एक सेकंड गवाएं ये तीनों कांच के शीशे तोड़कर आईसीयू में घुसे व बच्चों को निकालना शुरु किया व देखते ही देखते सबकी मदद से सभी 48 बच्चों को आग से बचाकर निकाल लिया गया। प्रकल्प प्रभारी महेन्द्र जैन की मानें तो यहां से जुडे सभी कार्यकर्ता सेवाभाव से अपना समय इन बेसहारा मरीजों की देखभाल के लिए देते हैं। वे कहते हैं, शायद इसी संवेदना ने इन कार्यकर्ताओं को आग से मुकाबला करने का साहस दिया। इस प्रकल्प के तहत् उन सारे मरीजों की भी देखभाल की जाती है जिनके परिजन उन्हें उनके हाल पर छोड़कर चले जाते हैं। प्रकल्प के पास अपनी एंबुलेंस है जो 24 घंटे घायल मरीजों के लिए इंदौर में हर जगह पहुंचती है। (साभार-सेवागाथा)

# चन्द्रकान्त जी का बलिदान कार्यकर्ताओं व राष्ट्रभक्त समाज को प्रेरणा देता रहेगा - सुरेश सोनी

**जम्मू कश्मीर।** राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जम्मू-कश्मीर प्रांत द्वारा बलिदानी चन्द्रकान्त जी को भावभीनी श्रद्धांजलि देने के लिए कार्यक्रम का आयोजन ईडन गार्डन, अखनूर रोड, जम्मू में किया गया। स्वर्गीय चन्द्रकान्त जी तथा उनके अंगरक्षक स्वर्गीय राजेन्द्र कुमार जी की आतंकवादियों द्वारा अंधाधुंध गोलियां चलाकर निर्मम हत्या कर दी गई थी। कार्यक्रम में जम्मू महानगर के असंख्य नागरिकों ने भाग लिया और पुष्पांजलि अर्पित की। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह सुरेश जी सोनी, अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख अरुण कुमार जी, अखिल भारतीय सह सम्पर्क प्रमुख रमेश जी पप्पा, प्रान्त संघचालक ब्रिगेडियर सुचेत सिंह जी एवं अन्य कार्यकर्ताओं ने भी श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

सुरेश सोनी जी ने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि स्वर्गीय चन्द्रकान्त निरन्तर 33 वर्षों से संघकार्य में सक्रिय थे। हिन्दू समाज को जोड़ने, जागरूक करने तथा संघर्षों से जूझने की प्रेरणा वह देते रहे। यह उन्हीं का प्रयास था कि राष्ट्रभक्त हिन्दू समाज ने अलगाववादी शक्तियों का इस दुर्गम क्षेत्र में डटकर मुकाबला किया। उनका बलिदान हमेशा कार्यकर्ताओं एवं हिन्दू समाज को प्रेरणा देता रहेगा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आतंकवादियों के इस अमानवीय कृत्य की घोर निन्दा करता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सदैव राष्ट्रभक्त नागरिकों तथा सुरक्षा बलों के साथ है तथा सुरक्षाबल इन अलगाववादी शक्तियों का पुरजोर मुकाबला करें, ताकि प्रान्त के राष्ट्रभक्त नागरिक शांति के साथ जीवन यापन कर सकें।

(शेष पृष्ठ १० पर)

# जलियांवाला बाग - हुतात्माओं की स्मृति में तिरंगा यात्रा

**अमृतसर।** जलियांवाला बाग में देश की आजादी के लिए प्राण न्यौछावर करने वाले बलिदानियों को श्रद्धांजलि देने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अमृतसर महानगर द्वारा तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में क्रूर अंग्रेज जनरल डायर ने निर्ममतापूर्वक हजारों निर्दोष लोगों की हत्या की थी। जलियांवाला बाग नरसंहार की 100वीं वर्षगाँठ पर अमृतसर के हाल गेट से जलियांवाला बाग तक तिरंगा यात्रा में हुतात्माओं का पुण्यस्मरण किया गया। इस तिरंगा यात्रा में स्वयंसेवकों के साथ ही सैकड़ों की संख्या में शामिल स्थानीय लोगों ने अमर बलिदानियों को सादर पुष्पांजलि दी।

तिरंगा यात्रा में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र प्रचारक प्रमुख रामेश्वर जी ने कहा कि 13 अप्रैल 1919 को आज से ठीक 100 वर्ष पूर्व जलियांवाला बाग में आततायी अंग्रेज जनरल डायर व उसके क्रूर सिपाहियों ने निरपराध देशभक्तों का खून बहाया था। तिरंगा यात्रा के माध्यम से हम जहाँ उस

(शेष पृष्ठ १० पर)

# स्वतंत्रता संग्राम में सामूहिक आत्मबलिदान का अनुपम प्रसंग

इतिहास साक्षी है कि भारत की स्वतंत्रता के लिए भारतवासियों ने गत 1200 वर्षों में तुर्कों, मुगलों, पठानों और अंग्रेजों के विरुद्ध जमकर संघर्ष किया है। एक दिन भी परतंत्रता को स्वीकार न करने वाले भारतीयों ने आत्मबलिदान करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। मात्र अंग्रेजों के 150 वर्षों के कालखंड में हुए देशव्यापी स्वतंत्रता संग्राम में लाखों बलिदान दिए गए। परन्तु अमृतसर के जलियांवाला बाग में हुए सामूहिक आत्मबलिदान ने अनगिनत क्रांतिकारियों को जन्म देकर अंग्रेजों के ताबूत का शिलान्यास कर दिया।

जलियांवाला बाग का वीभत्स हत्याकांड जहां अंग्रेजों द्वारा भारत में किये गये क्रूर अत्याचारों का जीता जागता प्रमाण है। वहीं भारतीयों द्वारा दी गयी असंख्य कुर्बानियों और आजादी के लिए तड़पते जज्बे का भी एक अनुपम उदाहरण है। कुछ एक क्षणों में सैकड़ों भारतीयों के प्राणोत्सर्ग का दृश्य तथाकथित सभ्यता और लोकतंत्र की दुहाई देने वाले अंग्रेजों के माथे पर लगाया गया ऐसा कलंक है जो कभी भी धोया नहीं जा सकता। यद्यपि इंग्लैण्ड की वर्तमान प्रधानमंत्री ने इस घटना के प्रति खेद तो जताया है, लेकिन क्षमायाचना किसी ने नहीं की।

अंग्रेजों को उखाड़ फेंकने के लिए अखिल भारत में फैल रही क्रांति को कुचलने के लिए ब्रिटिश हुकूमत द्वारा अनेक काले कानून बनाए जा रहे थे। स्वतंत्रता सेनानियों की आवाज को सदा के लिए खामोश करने के उद्देश्य से अंग्रेज सरकार ने रोलेट एक्ट बनाया। इस कानून का सहारा लेकर राजद्रोह के शक में किसी को भी गिरफ्तार करके जेल में डालना आसान हो गया था। भारत में बढ़ रही राजनीतिक और क्रान्तिकारी गतिविधियों को दबाने के लिए रोलेट एक्ट में कथित राजद्रोही को अदालत में जाकर अपना पक्ष रखने का कोई अधिकार नहीं था। बिना चेतावनी दिए लाठीचार्ज और गोलीबारी का अधिकार पुलिस और सेना को दे दिया गया था। ये रोलेट एक्ट 1919 में ब्रिटेन की सरकार ने वहां की इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल में एक प्रस्ताव के माध्यम से पारित किया था।

इस कानून के खिलाफ सारे देश में आक्रोश फैल गया। प्रदर्शनों और विरोध सभाओं की झड़ी लग गयी। अनेक नेता और स्वतंत्रता सेनानी कार्यकर्ता गिरफ्तार करके बिना मुकदमा चलाए जेलों में डाल दिए गए। अमृतसर के दो बड़े सामाजिक नेता डॉ. सत्यपाल और डॉ. सैफुद्दीन किचलू जब गिरफ्तार कर लिए गए तो अमृतसर समेत पूरे पंजाब में अंग्रेजों के विरुद्ध रोष फैल गया। उन दिनों 13 अप्रैल 1919 को वैशाखी वाले दिन पंजाब भर के किसान अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में वैशाखी स्नान करने के लिए एकत्र हुए थे। इसी दिन जलियांवाला बाग में एक विरोध सभा का आयोजन हुआ। जिसमें लगभग 20 हजार लोग उपस्थित थे। ये सभा काले कानून रोलेट एक्ट को तोड़कर हो रही थी। पंजाब के अंग्रेज गवर्नर जनरल माइकल ओ ड्वायर के आदेश से **जनरल डायर** के नेतृत्व वाली ब्रिटिश इंडियन आर्मी ने जलियांवाले बाग को घेर लिया और बिना चेतावनी के गोलीवर्षा शुरू कर दी।

आधुनिक इतिहासकार प्रो. सतीश चन्द्र मित्तल ने अपनी पुस्तक कांग्रेस – अंग्रेज भक्ति से राजसत्ता तक में पृष्ठ 56 पर ऐतिहासिक तथ्यों सहित लिखा है – ''1857 ईस्वी के महासमर के पश्चात् भारतीय इतिहास में पहला क्रूर तथा वीभत्स नरसंहार 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में हुआ। रोलेट एक्ट के विरोध की प्रतिक्रिया स्वरुप ब्रिटिश सरकार ने उसका बदला 11 अप्रैल को जनरल डायर को बुलाकर तथा वैशाखी के पर्व पर जलियांवाला बाग में सीधे पंजाब के कृषकों एवं सामान्य जनता पर 1650 राउंड गोलियों की बौछार करके किया। ये गोलियां सूर्य छिपने से पूर्व 6 मिनट तक चलती रहीं। सभी नियमों का उल्लंघन करके गोलियां उस ओर चलाई गई, जिस ओर भीड़ सर्वाधिक थी। हत्याकांड योजनापूर्वक था। जनरल डायर के अनुसार उसे गोली चलाते समय ऐसा लग रहा था, मानो फ्रांस के विरुद्ध

किसी मोर्चे पर खड़ा हो। गोलियों के चलने के पूर्व एक हवाई जहाज उस स्थान का चक्कर लगा रहा था।''

जलियांवाले बाग का नरसंहार भारत में चल रहे स्वतंत्रता संग्राम में एक परिवर्तनकारी घटना साबित हुई। पूरे देश में सशस्त्र क्रान्तिकारी सक्रिय हो गए। प्रतिक्रियास्वरूप रविन्द्र नाथ ठाकुर ने अपनी नाईटहुड की उपाधि वापस कर दी। बालक सरदार भगत सिंह ने जालियांवाले बाग की रक्तरंजित मिट्टी को उठाकर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ने का प्रण किया। इस नरसंहार के लिए जिम्मेदार गवर्नर ओ ड्वायर को 21 साल बाद 1940 में सरदार उधम सिंह ने इंग्लैण्ड में जाकर गोलियों से भून दिया। प्रत्येक वर्ष जलियाँवाले बाग में बलिदानियों की स्मृति में श्रद्धांजलि कार्यक्रमों का आयोजन होता है।

**शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले**
**वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा**

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा ने इस ऐतिहासिक प्रेरणादायी बलिदान के शताब्दी वर्ष पर एक प्रस्ताव पारित करके देशवासियों का आह्वान किया है— ''हम सबका यह कर्तव्य है कि बलिदान की यह अमरगाथा देश के हर कोने तक पहुंचे। हम सम्पूर्ण समाज से यह आह्वान करते हैं कि इस ऐतिहासिक अवसर पर अधिकाधिक कार्यक्रमों का आयोजन कर इन पंक्तियों को सार्थक करें।''

**तुमने दिया देश को जीवन देश तुम्हें क्या देगा ?**
**अपनी आग तेज रखने को नाम तुम्हारा लेगा।**
**( नरेंद्र सहगल )**

---

(पृष्ठ ८ का शेष)

अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख अरुण कुमार जी, जो जम्मू कश्मीर प्रान्त में सात वर्षों तक प्रान्त प्रचारक भी रहे, उन्होंने अपने कार्यकाल में उनके द्वारा किए गए कार्य के विषय में कहा कि स्वर्गीय चन्द्रकान्त अनेक गुणों से सम्पन्न कार्यकर्ता थे। वह एक कुशल संगठनकर्ता, कार्यकर्ताओं की संभाल तथा नित्य चिन्ता करने वाले तथा संघ के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित कार्यकर्ता थे। उन्होंने समाज के अनेक बंधुओं को संघ के साथ जोड़ा तथा निरन्तर संघकार्य में लगे रहने की प्रेरणा दी। डोडा, किश्तवाड़ में आतंकवाद के दौर में भी सेना का सतत सहयोग करते हुए वहाँ आतंकवाद से जूझते हुए, अपनी व अपने परिवार की चिन्ता न करते हुए स्थानीय नागरिकों का मनोबल बकाया। इस कारण आम समाज में भी उस दौर में अपने स्थान पर जमकर डटे रहने की हिम्मत बनी रही। श्रद्धांजलि कार्यक्रम में स्वामी रामेश्वर दास जी, स्वामी दिनेश भारती जी, सह प्रान्त संघचालक डॉ. गौतम मेंगी जी, प्रान्त कार्यवाह पुरुषोत्तम दधीचि व उपस्थित नागरिकों ने बलिदानी चन्द्रकान्त जी को पुष्पांजलि अर्पित की।

---

(पृष्ठ ८ का शेष)

नरसंहार के प्रति अपनी भावी पीढ़ी को जागरूक करेंगे, वहीं उन अमर बलिदानियों की आत्मा की शांति की भी कामना करते हैं जिन्होंने देश के लिए अपना सब कुछ स्वाहा कर दिया। हम सबकी यह मांग है कि जलियांवाला बाग के बलिदानियों को शहीद का सम्मान दिया जाए और उनके परिजनों व आश्रितों को उचित मुआवजा दिया जाए।

उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक ऐसा संगठन है जो आतंकवाद, आतंकियों और देश के दुश्मनों द्वारा मारे गए निर्दोष नागरिकों व जवानों के प्रति संवेदनशील रहकर उनकी चिंता करता है। संघ देश में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ लोगों को पहले से ही जागरूक करता आया है और आज भी कर रहा है। संगठन की विचार शक्ति से प्रभावित होकर लोग हमसे जुड़े हैं और जुड़ रहे हैं। कुछ राष्ट्रविरोधी ताकतें हमें धर्म और आतंकवाद का भय दिखाकर डराना चाहती हैं, लेकिन हम दुनिया को स्पष्ट करना चाहते हैं कि धर्म हमारे देश की आधारशिला है जो आज भी एकता व अखंडता का प्रतीक बन कर दुनिया के सामने खड़ा है। तिरंगा यात्रा में शहर के गणमान्यजन व विशिष्ट जन उपस्थित रहें।

# कला देश सेवा का माध्यम - डॉ. मोहन भागवत

**मुंबई ( विसंकें )।** राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि कला यह व्यक्तिगत नहीं होती, अपितु वह देश सेवा का एक माध्यम है। अपनी प्रगति के कारण कहीं देश की उन्नति का लक्ष्य धूमिल न हो जाए, इसके प्रति हमें सजग रहना चाहिये। उन्होंने कहा कि केवल गुणवान होना उपयोगी नहीं। बल्कि अपने गुणों के आधार पर, अपने कर्तृत्व से देश को और अच्छा कैसे बनाया जाए, इसके लिये हम सबको प्रयत्नशील रहना आवश्यक है। कला के माध्यम से जो अभिव्यक्त होता है, वह सीधा हृदय में उतर जाता है जो अधिक परिणामकारक होता है।

पू. सरसंघचालक जी 24 अप्रैल को मुंबई में मास्टर दीनानाथ स्मृति पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। पुलवामा आतंकी हमले के बलिदानी सैनिकों के बारे में डॉ. भागवत ने कहा कि सीमा पर हमारे वीर सैनिक हिम्मत के साथ डटकर खड़े रहते हैं। उन्हीं के कारण हम चैन की सांस ले रहे हैं। आपातकाल एवं संकट के समय सैनिक अपने प्राण अर्पण कर देते हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने मुक्ति किसे मिलती है, इसका उत्तर देते हुए भगवद्गीता में कहा है – संन्यासी और सीमा पर अपने प्राण न्यौछावर करने वाले सैनिक को मुक्ति मिलती है।

दीनानाथ मंगेशकर जी के कर्तृत्व का उल्लेख करते हुए कहा कि मा. दीनानाथ को ईश्वर ने कलाक्षेत्र के लिये ही बनाया था। परंतु, ईश्वर ने जो दिया, उसका उपयोग उन्होंने देशहित के लिये किया। उनके नाट्यों में हमें देशभक्ति और देशसेवा का दर्शन होता है। परतंत्रता के दिनों में वह आवश्यक था। उनके नाट्य गीत, गाने की पद्धति समाज को कार्यप्रवृत्त करती थी, समाज में उपयुक्त वीर रस प्रवाहित करती थी। मा. दीनानाथ जी की परंपरा मंगेशकर परिवार ने कायम रखी है।

संगीत, नाट्य, चित्रपट, साहित्य ऐसे विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्तियों को मंगेशकर परिवार के माध्यम से मास्टर दीनानाथ मंगेशकर स्मृति पुरस्कार प्रदान किया जाता है। सम्मान समारोह में बाबासाहेब पुरंदरे भी उपस्थित रहे। छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा देकर सरसंघचालक जी ने उन्हें सम्मानित किया। सीआरपीएफ के डीजी विजय कुमार सम्मान समारोह के अध्यक्ष थे।

मा. दीनानाथ विशेष पुरस्कार से पटकथा लेखक सलीम खान, अभिनेत्री हेलन और निर्देशक मधूर भांडारकर को सम्मानित किया गया। मा. दीनानाथ पुरस्कार से भरतनाट्यम की प्रसिद्ध कलाकार डॉ. सुचेता भिड़े, मोहन वाघ पुरस्कार से भद्रकाली प्रोडक्शन के प्रसाद कांबली, आनंदमयी पुरस्कार से पं. सुरेश तलवलकर के तालयोगी आश्रम (संस्था को) एवं वाग्विलासिनी पुरस्कार से मराठी कवि वसंत आबाजी डहाके को सम्मानित किया गया।

### सीआरपीएफ को दी एक करोड़ रुपये की राशि

लता मंगेशकर की ओर से पुलवामा हमले में बलिदान हुए सैनिकों के परिजनों की सहायता के लिये एक करोड़ रुपए की राशि सीआरपीएफ डीजी को दी गई। अस्वस्थता के कारण लता मंगेशकर जी समारोह में उपस्थित नहीं थीं। उनकी बहन उषा मंगेशकर ने राशि विजय कुमार जी को सौंपी। अन्य कलाकारों व सहयोगियों ने 18 लाख रुपये की राशि सीआरपीएफ को दी।

डीजी विजय कुमार ने कहा कि पुलवामा हमले के पश्चात, **भारत के वीर** – एप व वेबसाइट के माध्यम से सहयोग निधि भेजी है। और 225 करोड़ रुपये की सहयोग राशि प्राप्त हो चुकी है।

# सेवा भारती के द्वारा लोकार्पित हुआ मोक्षरथ

**कोरबा।** समाज सेवा के लिये सदैव तत्पर **सेवा भारती** ने मानवता की दिशा में कदम बढ़ाएं हैं। उसके महत्वाकांक्षी प्रकल्प मोक्ष रथ का शुभारंभ रामनवमी को बालको सी.ई.ओ. विकास शर्मा सहित अतिथियों ने किया।

श्री शर्मा ने मुख्य अतिथि के रूप में अपनी बात रखते हुए सेवा भारती के कार्यों को सराहा और हर संभव सहयोग का भरोसा दिया। जीवन के सार तत्व को रेखांकित करने के साथ उन्होंने कहा कि पार्थिव देह को ससम्मान अंतिम स्थान तक पहुँचाने की चिंता और प्रबंध अपने आप में बड़ा विचार और कार्य है। उन्होंने अनाथ बच्चों के संरक्षण के लिए संचालित **मातृछाया** के प्रयास को अद्‌भुत बताया। यह भी आशा व्यक्त की कि गोदग्रहित बच्चे देश के जिम्मेदार नागरिक बनेंगे।

विशिष्ट अतिथि श्रेया महिला मंडल गेवरा की अध्यक्ष ऋतुंजलि पाल ने समाज को मानव सभ्यता के विकास की कड़ी बताने के साथ सेवा भारती के प्रयासों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि अच्छे कार्यों का हिस्सा बनना सौभाग्य होगा।

डीपीएस बालको के प्राचार्य कैलाश पवार आयोजन से अभिभूत हुए। उन्होंने कहा कि जीवन ईश्वर का दिया उपहार है, इसकी उपयोगिता बेहतर हो, यह जरूरी है। **मातृछाया** के स्नेह से बच्चे संरक्षित हो रहे है। संस्था ने जिस उद्‌देश्य से मोक्ष रथ प्रारंभ किया, वह वंदनीय है। सेवा भारती के स्थानीय अध्यक्ष डॉ. विशाल उपाध्याय ने स्वागत उद्‌बोधन दिया। श्री किशोर बुटोलिया ने मातृछाया को प्रारंभ करने की पृष्ठभूमि और बाद की कठिनाई तथा सफलता पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने मोक्ष रथ को लेकर बताया कि 1 माह पहले ही इस विषय पर औपचारिक चर्चा हुई। दृढ़ता व संकल्प से यह कार्य समाज के सहयोग से पूरा हो सका। ऐसे सभी सहयोगियों का सम्मान श्रीफल भेंटकर किया गया।

---

(पृष्ठ ३ का शेष)

हमलावरों के नाम तथा कुछ मामलों में तो उनका निजी विवरण तक प्राप्त करने में सफल हो जाती है लेकिन भारत में 2008 का एक केस 2019 तक क्यों नहीं सुलझ पाता। साध्वी का विरोध करने वाले इस तथ्य को भी नजरअंदाज नहीं कर सकते कि अगर साध्वी प्रज्ञा को अदालत ने आरोप मुक्त नहीं किया है तो इन 8 सालों में वो दोषी भी नहीं सिद्ध हुई। बल्कि ऐसे कोई सबूत ही नहीं पाए गए जिससे उन पर मकोका लगे जिसके अंतर्गत उनकी गिरफ्तारी हुई थी। इसलिए अन्ततः 2008 में बिना सबूत और बिना एफआईआर गिरफ्तार साध्वी पर से 2015 में मकोका हटाई गई और उन्हें जमानत मिली।

इसके अलावा सभी के पास हैदराबाद के एक महाविद्यालय के हिन्दू नाम वाले फर्जी पहचान पत्र भी थे। इसके बावजूद तब भारत में ही कुछ नेताओं ने इस हमले में पाकिस्तान का हाथ होने से इंकार कर दिया और यह कहकर कि मालेगाँव की ही तरह 26/11 के पीछे भी हिन्दू संगठनों का हाथ है और 2008 के मालेगाँव धमाके 2006 के मालेगाँव धमाके, अजमेर दरगाह और समझौता कांड सभी के तार एक दूसरे से मिल रहे हैं, हिन्दू आतंकवाद के सिद्धांत को स्थापित करने की कोशिश की। इतना ही नहीं, यहां तक कहा गया कि हेमंत करकरे जो कि इस हमले में शहीद हुए थे उनको मालेगाँव केस के आरोपियों से धमकियां मिल रही थीं।

# केन्द्र सरकार की योजनाओं का दस्तावेज है 'विकास के पथ पर भारत'

— लोकेन्द्र सिंह

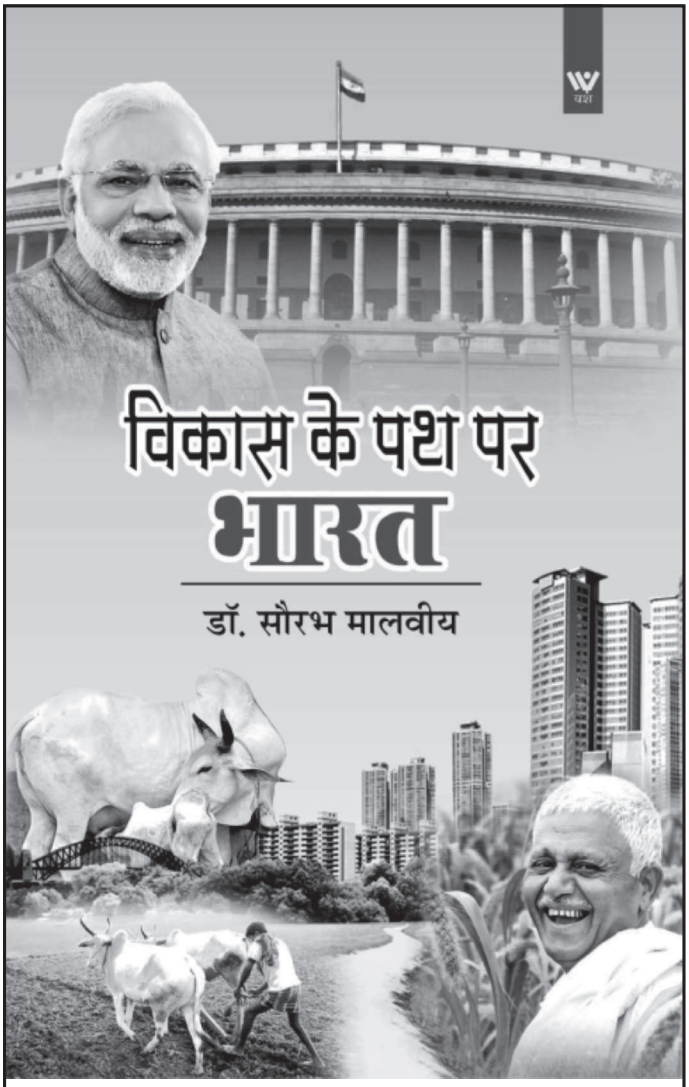


पुस्तक – विकास के पथ पर भारत
लेखक – डॉ. सौरभ मालवीय
प्रकाशक – यश पब्लिकेशन्स, दिल्ली
मूल्य – 395 रुपये (साजिल्द)

लेखक और मीडिया शिक्षक डॉ. सौरभ मालवीय की पुस्तक 'विकास के पथ पर भारत' केन्द्र सरकार की महत्वपूर्ण योजनाओं का दस्तावेज है। यह पुस्तक सामान्य जन से लेकर उन सबके लिए महत्वपूर्ण साबित होगी जो देश में चल रहीं लोक कल्याणकारी योजनाओं को समझना चाहते हैं। यह उन अध्येताओं, सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ताओं के लिए भी उपयोगी है, जो देश की जनता तक सरकारी योजनाओं को पहुँचाने का माध्यम बनते हैं। सरल और सहज भाषा में लिखी गई इस पुस्तक में युवा, महिला, किसान, गरीब, गाँव, शहर इत्यादि के विकास और सशक्तिकरण पर केन्द्रित केन्द्र सरकार की प्रमुख 34 योजनाओं को शामिल किया गया है। यह पूर्वाग्रह रखना अनुचित होगा कि मोदी सरकार की उपलब्धियों को रेखांकित करने के उद्देश्य से यह पुस्तक लिखी गई है। लेखक ने मनोगत में पुस्तक की संकल्पना को स्पष्ट किया है— ''अक्सर ऐसा होता है कि अज्ञानता और अशिक्षा के कारण लोगों तक सरकार की जन हितैषी योजनाओं की जानकारी नहीं होती है, जिसके कारण वे इन योजनाओं का लाभ उठाने से वंचित रह जाते हैं। इस पुस्तक का उद्देश्य यही है कि लोग उन सभी योजनाओं का लाभ उठाएं, जो सरकार उनके कल्याण के लिए चला रही है।''

पुस्तक में लेखक ने योजनाओं का संकलन मात्र नहीं किया है, अपितु उन योजनाओं की आवश्यकता को सरलता के साथ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। योजना कब शुरू हुई, उसका उद्देश्य क्या है, बजट कितना है और परिणाम क्या प्राप्त हो रहे हैं, यह सब उन्होंने अपने प्रत्येक आलेख में समेटने का प्रयास किया है। महात्मा गाँधी अक्सर कहते थे कि गाँव के बिना भारत का विकास नहीं हो सकता। यकीनन भारत को विकास के पथ पर तेज गति से आगे बढ़ना है तो गाँव और किसान की चिंता करनी ही पड़ेगी। हम सिर्फ शहरों को 'स्मार्ट' बना कर देश नहीं बना सकते। भारत के निर्माण के लिए आवश्यक है कि 'स्मार्ट सिटी' के साथ-साथ 'स्मार्ट विलेज' के

प्रयास भी करने होंगे। यह बात वर्तमान केंद्र सरकार ने समझी है। किसानों की आय बढ़ाने का मसला हो या फिर गाँवों तक आधुनिक सुविधाएं पहुँचाने का मुद्दा, सरकार की प्राथमिकता में शामिल हैं। गाँव और किसान के विकास के लिए मोदी सरकार ने कई योजनाएं प्रारंभ की हैं। अपनी पुस्तक का नामकरण करते समय लेखक ने भी अनुभव किया होगा कि गाँव को प्राथमिकता में रखे बिना 'विकास के पथ पर भारत' नहीं बढ़ सकता। संभवत: इसलिए ही पुस्तक के पहले हिस्से में लेखक ने गाँव, किसान और कृषि को समर्पित नौ योजनाओं का विवरण दिया है। पुस्तक का आवरण पृष्ठ भी यही कहता है। राष्ट्रीय मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, परंपरागत खेती विकास योजना, दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, राष्ट्रीय कृषि बाजार यानी ई-नाम जैसी योजनाएं गाँव और किसान के जीवन को बेहतर बना रही हैं। प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना ने अनेक बेघरों को घर दिए हैं तो अनेक लोगों के कच्चे मकान अब पक्के हो गए हैं। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना ने किसानों को एक भरोसा दिया है। गरीबी उन्मूलन और रोजगार सृजन की दो महत्वपूर्ण योजनाओं का विवरण भी पुस्तक में शामिल है। ग्रामीण क्षेत्र में दीनदयाल अंत्योदय योजना और दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना के महत्व को लेखक ने रेखांकित किया है।

महिला सशक्तिकरण का ध्यान रखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मध्यप्रदेश की शिवराज सरकार की योजना 'बेटी बचाओ' को एक कदम आगे लेकर गए- 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ'। इसके अलावा मातृत्व वंदना योजना और महिला शक्ति केंद्र योजना की जानकारी भी शामिल की गई है। मोदी सरकार ने मुस्लिम महिलाओं को जागरूक और सशक्त करने के पर्याप्त प्रयास किए हैं। तीन तलाक जैसी अमानवीय व्यवस्था को बंद करने के लिए सरकार ने कानून तक लागू कर दिया है। हालाँकि पुस्तक में तीन तलाक पर विस्तार से कोई जानकारी नहीं है क्योंकि यह कानून है, योजना नहीं। किंतु, मुस्लिम समुदाय की महिलाओं को सशक्त करने की योजना 'हज नीति' का विवरण मिलता है। सरकार की नयी हज नीति के कारण अब महिलाएं अकेले भी हज के लिए जा सकती हैं। बहरहाल, लेखक ने 'आयुष्मान भारत' और 'उज्ज्वला योजना' जैसी महत्वाकांक्षी योजनाओं पर भी महत्वपूर्ण आलेख तैयार किए हैं। इन दोनों योजनाओं के अब तक के परिणाम भी सराहनीय है। प्रमुख 34 योजनाओं के अतिरिक्त लेखक डॉ. सौरभ मालवीय ने पुस्तक प्रकाशित होते-होते कई और महत्वपूर्ण योजनाओं की अद्यतन जानकारी बुलेट प्वाइंट के रूप में दी है। निश्चित तौर उनके द्वारा किया गया यह प्रयास सामान्य लोगों को लाभ पहुँचाएगा। लेखक ने सरकार और जनता के बीच एक सेतु का निर्माण किया है।

पुस्तक जिस समय आई है, वह भी अपने आप में महत्वपूर्ण है। संभवत: समय का चयन प्रकाशक की योजना में रहा हो। यह पुस्तक ऐसे समय में आई है, जब बार-बार यह प्रश्न उठाया जाता है कि मोदी सरकार ने पाँच साल में क्या किया? आपके सामने यदि कोई यह सवाल उठाए तो उसे डॉ. मालवीय की पुस्तक 'विकास के पथ पर भारत' पढ़ने की सलाह दीजिएगा। पुस्तक नये भारत की उस तस्वीर को रखने में यथासंभव सफल होती है, जहाँ बेहतरी के लिए बुनियादी कदम उठाए जा रहे हैं। सकारात्मक ढंग से योजनाओं का प्रस्तुत किया गया है। योजनाओं में नुक्ता-चीनी करने के लिए वैसे भी अनेक लोग लगे हुए हैं। इस बीच, जनता को उन योजनाओं की जानकारी देने के प्रयासों का भी स्वागत होना चाहिए, जो योजनाएं जनता के लिए ही हैं। यह पुस्तक यश पब्लिकेशन्स, दिल्ली से प्रकाशित है। 160 पृष्ठों की इस पुस्तक का मूल्य 395 रुपये (साजिल्द) है।

(समीक्षक विश्व संवाद केन्द्र, भोपाल के कार्यकारी निदेशक हैं।)

# मानसिक स्वास्थ्य के लिए उपयोगी आसन

मन को ठीक करने के लिए यौगिक क्रियाएं जैसे पद्मासन, वज्रासन, शीर्षासन, सर्वांगासन, हलासन, भुजंगासन, जानुशिरासन, त्रिकोणासन तथा उष्ट्रासन आदि उपयोगी हैं।

**हलासन**—जमीन पर पीठ के बल लेट जाइये। दो गहरे सांस लें व छोड़ें। इसके बाद दोनों पैरों को जमीन से ऊपर उठाते हुए धीरे-धीरे सिर के पीछे जमीन पर ले जाएं। कमर को जमीन से ऊपर उठाने के लिए हाथ का सहारा ले सकते हैं। हाथों को पीठ के पीछे जमीन पर सामान्य अवस्था में रखें। इस स्थिति में आरामदायक अवधि तक रुक कर पूर्व स्थिति में आ जाएं। सामान्य गति से श्वास लें व छोड़ें।

सीमाएं : उच्च रक्तचाप, हृदय रोग तथा स्लिप डिस्क एवं स्पॉन्डिलाइटिस के रोगी अभ्यास न करें।

**उज्जायी प्राणायाम**—पद्मासन, सुखासन या कुर्सी पर रीढ़, गले व सिर को सीधा करके बैठिए। दोनों हाथों को घुटनों पर सहजता से रखें। जिह्वा को अग्रभाग से मोड़कर ऊपरी तालू से सटाएं। गले की श्वास नली को थोड़ा संकुचित कर नासिका द्वारा एक गहरी, लंबी व धीमी श्वास अंदर लें। श्वास लेते समय गले से सीऽ सीऽ सी की आवाज निकलती है, जबकि नाक से सांस छोड़ते समय ह ऽ ह ऽ हऽ ह की आवाज निकलती है। यह उज्जायी प्राणायाम की एक आवृत्ति है। शुरू में 15 से 20 आवृत्तियों का अभ्यास करें। धीरे-धीरे आवृतियों को बढ़ा कर 120 तक करें।

ध्यान : पद्मासन, सिद्धासन, सुखासन या कुर्सी पर रीढ़, गला व सिर को सीधा कर बैठ जाइये। हाथों को घुटनों पर ज्ञान मुद्रा में रखें। अब दस गहरी श्वास लें और छोड़ें। 10-15 मिनट तक इसका नियमित अभ्यास करें। अभ्यास के दौरान मन को बार-बार विचारों से हटा कर सांसों पर केन्द्रित करें। कुछ समय बाद मन एकाग्र होने लगता है व तनाव-अवसाद से मुक्ति मिलने लगती है।

# इस माह में किए जाने वाले कृषि कार्य

**दलहनी फसल :** • इस समय मूंग, उर्द, लोबिया की फसल में 12 से 15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें। • मूंग में पत्तियों के धब्बा रोग की रोकथाम के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराईड 0.3 प्रतिशत का घोल बनाकर 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें। • दलहनी फसल में धब्बा रोग के लिए कार्बेन्डाजिम 500 ग्राम/हैक्टेयर के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें। • पीला मौजैक रोग की रोकथाम के लिए एक लिटर मेटासिस्टाक्स दवा को 1000 लिटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

**गेहूँ :** • गेहूँ में बढ़ाई का कार्य शीघ्र पूरा कर ले। • अनाज के भण्डारण से पहले गेहूँ को धूप में इतना सुखाएँ कि उसमें नमी 10-12 प्रतिशत से अधिक ना हो। • गेहूँ भण्डारण से पहले भण्डारगृह को 0.3 प्रतिशत मैलाथियान के घोल से विसंक्रमित कर लें। • अनाज के बोरों को अनाज भरने से पहले भूसे व नीम की सूखी पत्तियाँ बिछा लें। बोरो को दीवार से 50 से.मी. दूर रखे। • अनाज को 1000 : 1 के अनुपात में नीम के बीज के पाऊडर के साथ रखें।

**सब्जियाँ :** • कद्दू वर्ग की सब्जियों में सिंचाई करें। • कद्दू वर्ग की सब्जियों में फल मक्खी के नियंत्रण के लिए प्वाइजन वेट्स का प्रयोग करें। • प्वाईजन वेट्स- एक लीटर पानी में 1.5 मि.ली. मिथाइल यूनीनॉल, 2 मि.ली. लीटर डाईक्लोरोवॉस मिलाएं तथा चौड़े मूंह के जार में 4-5 जगह पर रख दें। • फरवरी व मार्च में रोपे गये टमाटर, बैंगन, मिर्च में 50-50-40 कि.ग्रा. NPK की एक तिहाई मात्रा की दूसरी व 45 दिन बाद तीसरी ड्रेसिंग करें।

**मानस प्रसंग** गतांक से आगे —

गोस्वामी तुलसीदास जी आगे लिखते हैं कि हिमाचल की बात सुनकर नारद जी ने हँसते हुए रहस्यमुक्त कोमल वाणी से कहा कि तुम्हारी कन्या सब गुणों की खान है। यह स्वभाव से सुन्दर, सुशील और समझदार है। उमा, अम्बिका और भवानी इसके नाम हैं। कन्या सभी सुलक्षणों से संपन्न है तथा यह अपने पति को सदा प्यारी रहेगी। वे आगे लिखते हैं कि—

**सदा अचल एहि कर अहिवाता। एहि तें जसु पैहहिं पितु माता॥**
**होइहि पूज्य सकल जग माहीं। एहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं॥**

अर्थात् इसका सुहाग सदा अचल रहेगा और इससे इसके माता-पिता के यश में वृद्धि होगी। यह सारे संसार में पूज्य होगी और इसकी सेवा करने में कुछ भी दुर्लभ नहीं रहेगा। इसके नाम का स्मरण करके संसार की स्त्रियाँ पतिव्रत रुपी तलवार की धार पर चढ़ा करेंगीं। नारद जी ने आगे कहा कि, हे हिमाचल! तुम्हारी कन्या सुलक्षिणी है। अब इसमें जो दो-चार अवगुण है, उन्हें भी सुन लीजिये, इसका पति गुणहीन, मान-हीन, माता-पिता-विहीन, उदासीन, निश्चिंत योगी, जटाधारी, निष्काम-हृदय, नंगा और अमंगल वेष वाला होगा—

**जोगी जटिल अकाम मन नगन अमंगल बेष।**
**अस स्वामी एहि कहँ मिलिहि परी हस्त असि रेख॥**

गोस्वामी जी आगे लिखते है कि— नारद जी वचन सुनकर और उन्हें मन में सत्य समझकर राजा हिमाचल और उनकी पत्नि को दु:ख हुआ और पार्वती जी प्रसन्न हुई। इस रहस्य को नारद जी भी न जान सके, क्योंकि सबकी बाहरी दशा एक सी होने पर भी भीतरी समझ अलग-अलग थी। सभी सखियों, पार्वती हिमवान् और मैना के शरीर रोमांचित थे और सबके नेत्र सजल थे। पार्वती ने उन वचनों को इस विश्वास के साथ हृदय में रख लिया कि देवर्षि नारद की बात कभी झूठी नहीं हो सकती। उनके मन में शिवजी के चरण-कमलों में स्नेह उत्पन्न हो आया, परन्तु मिलना कठिन होने का संदेह हुआ। अवसर अच्छा न जानकर उन्होंने अपने प्रेम को छिपा लिया और सखियों के उत्साह में सम्मिलित हो गई। देवर्षि नारद की वाणी के असत्य न होने का विचार कर हिमाचल, मैना और चतुर सखियाँ चिंतित हो उठे। पर्वतराज ने धीरज रखकर नारद जी से कहा कि - हे देवर्षि! अब क्या उपाय किया जाय ? नारद जी ने उन्हें समझाते हुए कहा—

**कह मुनीस हिमवंत सुनु जो बिधि लिखा लिलार।**
**देव दनुज नर नाग मुनि कोउ न मेटनिहार॥**

अंक में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है। संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं। न्यायालय क्षेत्र, रायपुर ( छ.ग. )

# राष्ट्र जागरण में सहयोग करें

## राष्ट्रीय साहित्य उपहार में दें...

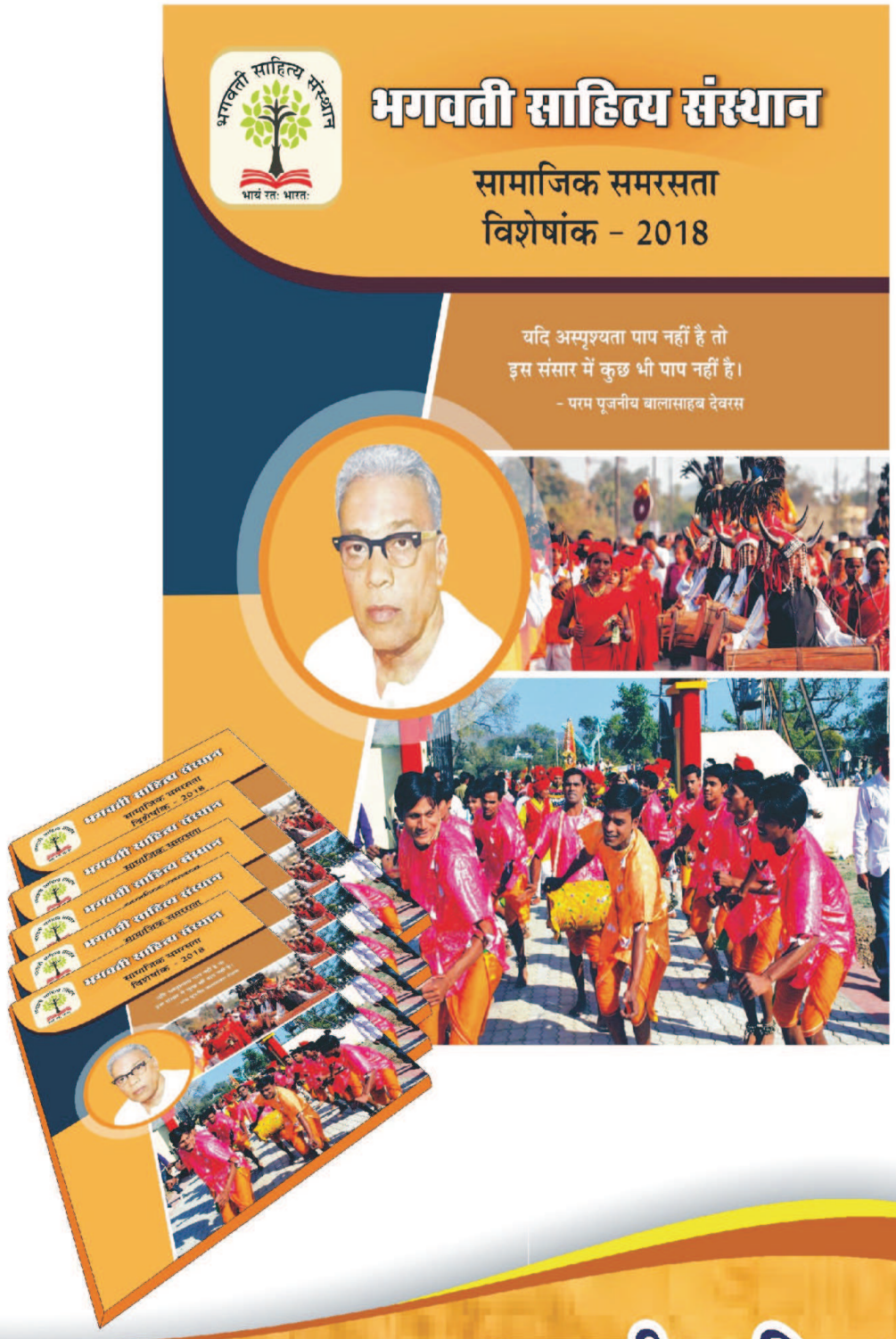


पढ़िए एवं
पढ़ाइए,
हर घर
पहुंचाइए

# भगवती साहित्य संस्थान

स्वदेशी भवन, राम मंदिर मार्ग, रायपुर, छत्तीसगढ़

आर.एन.आई. पंजी. क्र.-६६६३५/९५ डाक पंजीयन संख्या-छ.ग./रायपुर संभाग ०६/२०१८-२०

# इस माह की स्मरणीय विभूतियाँ

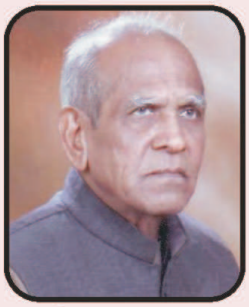

विष्णुकुमार
जयंती ०५ मई

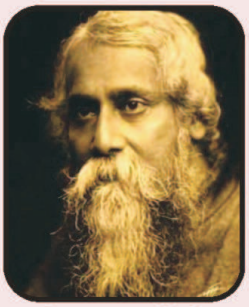

रविन्द्रनाथ टैगोर
जयंती ०७ मई

गोपाल कृष्ण गोखले
जयंती ०९ मई

सुमित्रानंदन पंत
जयंती २० मई

राजा राममोहन राय
जयंती २२ मई

रास बिहारी बोस
जयंती २५ मई

अहिल्याबाई होल्कर जयंती
ज्येष्ठ कृ. ७, २६ मई

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
जयंती २७ मई

स्वातंत्र्यवीर सावरकर
जयंती २८ मई

वल्लभाचार्य जयंती
ज्येष्ठ कृ. ११, 30 मई

जलियांवाला बाग - हुतात्माओं की स्मृति में तिरंगा यात्रा अमृतसर ( 13-04-2019 )

प्रेषक,

शाश्वत राष्ट्रबोध
गद्रे स्मृति भवन, जवाहर नगर,
रायपुर छ.ग. पिन - ४९२००१
फोन नं. - ०७७१-४०७२०७०

**शाश्वत राष्ट्रबोध - मासिक पत्रिका**
माह - मई २०१९

प्रति,

.....

.....

.....

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक नरेन्द्र जैन, जागृति मण्डल, गोविन्द नगर, रायपुर द्वारा गुप्ता ऑफसेट से छपवाकर शाश्वत बोध विकास समिति, गद्रे स्मृति भवन, जवाहर नगर, रायपुर से प्रकाशित।
संपादक - नरेन्द्र जैन, कार्यकारी संपादक - महेश कुमार शर्मा, E-mail : rashtrabodh.sangh@gmail.com

डाक टिकट

Composed & Designed : Avinash # 98263-31427